मैथिलीशरण गुप्त

विचार लो की मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी
मरो, परन्तु यों मरो की याद जो करें सभी.
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिए
मरा नहीं वही की जो जिया न आपके लिए.
वही पशु प्रवृत्ति है जो आप आप ही चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

उस आदमी का जीना या मरना अर्थहीन है जो अपने स्वार्थ के लिए जीता या मरता है. जिस तरह से पशु का अस्तित्व सिर्फ अपने जीवन यापन के लिए होता है, मनुष्य का जीवन वैसा नहीं होना चाहिए. ऐसा जीवन जीना वाले कब जीते हैं और कब मरते हैं कोई ध्यान ही नहीं देता है. हमें दूसरों के लिए कुछ ऐसे काम कर जाने चाहियें की मरने के बाद भी लोग हमें याद रखें. साथ में हमें ये भी अहसास होना चाहियें की हम अमर नहीं हैं, इससे मृत्यु का भय हमारे अन्दर से चला जाता है.

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती.
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती.
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

जो आदमी पूरे संसार में आत्मीयता और भाईचारा का संचार करता है उसी उदार की कीर्ति युग युग तक गूंजती है और धरती भी सदैव उसकी कृतघ्न रहती है.

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी
तथा दधिची ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी.
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर चर्म भी दिया.
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे.
वही मनुष्य है की जो मनुष्य के लिए मरे.

पौराणिक कथाओं में ऐसे कई महादानियों की कहानियाँ भरी पड़ी हैं जिन्होनें दूसरों के हित के लिए अपना सबकुछ दान कर दिया. रंतिदेव ने अपने हाथ की आखिरी थाली भी दान में दे दी थी. दधिची ने वज्र बनाने के लिए अपनी हड्डियाँ देवताओं को दे दी थी. सिबि ने कबूतर की जान बचाने की लिए बहेलिए को अपने शरीर का मांस दे दिया. ऐसे बहुत से महापुरुष इस दुनिया में पैदा हुये हैं जिनके परोपकार के कारण आज भी लोग उन्हें याद करते हैं.

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही.
विरुद्धवाद बुद्ध का दया प्रवाह में बहा
विनीत लोक्वर्ग क्या न सामने झुका रहा.
अहा वही उदार है परोपकार जो करे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

पूरी दुनिया पर उपकार करने की इक्षा ही सबसे बड़ा धन होता है. इश्वर भी ऐसे लोगों के वश में हो जाते हैं. जब भगवान् बुद्ध से लोगों का दर्द नहीं सहा गया तो वे दुनिया के नियमों के खिलाफ हो गए. उनका दुनिया के विरुद्ध जाना लोगों की भलाई के लिए था इसलिए आज भी लोग उन्हें पूजते हैं.

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में.
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं.
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

यहाँ पर कोई भी अनाथ नहीं है, भगवान् के हाथ इतने बड़े हैं कि उनका हाथ सबके सर पर होता है. अतः यह सोचकर कभी भी घमंड नहीं करना चाहिये कि तुम्हारे पास बहुत संपत्ति या यश है. ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा भाग्यहीन होता है.

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े
समक्ष ही स्वबाहु जो बढा रहे बड़े बड़े.
परस्परावलम्ब से उठो तथा बढो सभी
अभी अमर्त्य अंक में अपंक हो चढो सभी.
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे.
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

जिस तरह से ब्रह्माण्ड में अनंत देवी देवता जनहित के लिए एक दूसरे के साथ मिलजुलकर काम करते हैं, उसी तरह इंसान को भी आपसी भाईचारे से काम करने चाहिये. ऐसा नहीं होना चाहिये कि किसी से किसी और का काम न चले, बल्कि सभी एक दूसरे के काम आयें.

मनुष्य मात्र बन्धु हैं' यही बड़ा विवेक है
पुराणपुरुष स्वयम्भू पिता प्रसिद्ध एक है.
फलानुसार कर्म के अवश्य वाह्य भेद हैं.
परन्तु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं.
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु कि व्यथा हरे.
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

सभी मनुष्य एक दूसरे के भाई बंधू हैं और सबके माता पिता परम परमेश्वर हैं. कोई काम बड़ा है या छोटा ऐसा सिर्फ बाहर से दिखता है, अन्दर से सभी एक समान हैं. इसलिए कर्म के आधार पर किसी को बड़ा या छोटा नहीं समझना चाहिये. भाई अगर भाई कि पीड़ा ना हरे तो मानव जीवन व्यर्थ है. ये पंक्तियाँ कहीं न कहीं हमारी जाति व्यवस्था कि तरफ इशारा करती हैं.

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें धकेलते हुए.
घटे न हेलमेल हाँ, बढे न भिन्नता कभी
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी.
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

हमें अपने लक्ष्य की ओर हंसते हुए और रास्ते की बाधाओ को हटाते हुए चलते रहना चाहिये. जो रास्ता आपने चुना है उसपर बिना किसी बहस के पूरी निष्ठा से चलना चाहिये. इसमें भेदभाव बढ़ने की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिये, बल्कि भाईचारा जितना बढे उतना ही अच्छा है. वही समर्थ है जो खुद तो पार हो ही और दूसरों की नैया को भी पार लगाये.

यह पूरी कविता सहोपकारिता और परोपकारिता का उपदेश देती है. जीवन के हर परिप्रेक्ष्य में हम एक दूसरे के सहयोग पर निर्भर करते हैं. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और पूरा मानव समाज इसी सहयोग पर आधारित है. जो दूसरे की भलाई में जीवन लगाता है, उसे आने वाली पीढियां हमेशा याद रखती हैं.